माननीय राज्यपाल राजस्थान एवं कुलाधिपति

श्री कल्याण सिंह

का उद्‌बोधन

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर का दसवाँ दीक्षान्त समारोह

24 दिसम्बर, 2016
मध्याह्न : 12.00 बजे
उदयपुर, राजस्थान

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर (राज.)

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त संस्कार हेतु माननीय श्री राज्यपाल का सम्बोधन

विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रबन्ध मण्डल व अकादमिक परिषद् के सदस्यगण, समस्त अधिष्ठाता, संकाय साथी, सम्माननीय अतिथि, दीक्षान्त समारोह में भाग ले रहे पदक विजेता व उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, भाइयो और बहिनों।

विश्वविद्यालय के वर्तमान सत्र के दीक्षान्त संस्कार कार्यक्रम में आज शामिल होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

सर्व प्रथम युग पुरूष प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप को शत–शत नमन्।

मुझे यह जानकर हर्ष है कि विश्वविद्यालय द्वारा कृषि, अभियांत्रिकी, गृह विज्ञान, डेयरी तथा मत्स्य पालन के संकायों में 6 महाविद्यालयों द्वारा स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विद्यावाचस्पति के 69 शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। कृषि शिक्षा में समसामयिक विषयों को सम्मिलित कर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की पांचवीं डीन्स कमेटी की सिफारिशों के अनुरूप नवाचार किये जा रहे हैं, साथ ही कृषि शिक्षा में गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए "8 प" के सिद्धांतों के अनुरूप शिक्षा के मापदण्ड अपनाये जा रहे हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। समय के अनुसार बढ़ती हुई जनसंख्या तथा विश्व बाजार में हो रहे बदलाव को दृष्टिगत रखते हुए, कृषि सम्बन्धित नीति, प्रक्रियाओं व तौर–तरीकों में परिवर्तन कर जो विकास की लहर उठी है वह हर क्षेत्र को छूती हुई किसानों तक पहुँच चुकी है या पहुँच रही है।

भारतीय जीवन और संस्कृति स्वयं एक बहुत बड़ा पारिस्थितिकीय क्षेत्र है तथा कृषि इसका एक महत्वपूर्ण अंग है। बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सन् 1966 में मैक्सिको से गेहूँ की व फिलीपाइन्स से चावल की उन्नत किस्मों का आयात कर भारत में हरित क्रान्ति का बिगुल बजाया गया जिसके परिणामस्वरूप पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व आन्ध्र प्रदेश के

किसानों ने भरपूर खाद्यान्न उत्पादन कर देश के गोदाम अनाज से भर दिए। तिलहनी फसलों के लिए भी "पीली क्रान्ति" की शुरूआत कर भरपूर उत्पादन प्राप्त किया गया। सन् 1990 के दशक में राजस्थान में सरसों के क्षेत्रफल व उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि ने सभी को अचम्भित कर दिया व किसानों को इससे लाभ भी हुआ। कपास, बाजरा, मक्का, चना, मूंगफली आदि फसलों में नई किस्मों के विकास तथा भरपूर उर्वरक व सिंचाई के सहयोग से अधिक उपज प्राप्त कर आज भी किसान अच्छा लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

आर्थिक उदारीकरण के बाद सारा संसार एक वैश्विक गाँव बन चुका है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में टिकने के लिए कम लागत पर अधिक उत्पादन करने की आवश्यकता है। साथ ही पर्यावरण व रसायनों के प्रयोग से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों के कारण अब लोग स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक होने लगे हैं। वर्तमान में कृषि के सर्वांगीण विकास के लिए सदाबहार क्रान्ति को प्राप्त करने पर जोर दिया जा रहा है।

बारानी क्षेत्रों में कृषि उत्पादन बढ़ाने पर विशेष प्रयास किये जाने की आवश्यकता हैं। जिसके तहत जल संरक्षण, बागवानी, जीरो बजट खेती तथा वैकल्पिक भू–उपयोग पद्धति से किसान की आय के साधन बढ़ाने के लिए नई तकनीकों एवं कार्यशैली का समावेश एक मुख्य ध्येय है।

पराजीन फसलें, जैविक कृषि, कृषि उत्पाद प्रसंस्करण, फार्म मशीनरी तथा कृषि व्यवसाय प्रबन्धन जैसे पहलुओं को ध्यान में रखकर आत्मा परियोजना के तहत जिले वार योजना बनाकर कृषि के सर्वांगीण विकास के लिए नई तकनीकी किसानों तक पहुँचाना आज मुख्य चुनौती है।

विश्वविद्यालय को समन्वित कृषि पद्धति के माध्यम से तथा अब तक के अनुसंधान कार्यो को किसान के खेत पर पहुँचाकर कृषि में विकास की दर बढ़ाने के लिए कृषक–भागीदारी कार्यक्रमों पर जोर देना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन के कारण खेती में बढ़ते जोखिम को निपटने के लिए मौसम आधारित बीमा, फसल बीमा एवं आकस्मिक फसल योजना प्राथमिकता के क्षेत्र बनकर उभरे हैं, जिनकी सही जानकारी का किसानों तक पहुँचना कृषि विकास की दशा एवं दिशा तय करेगा। इसके लिए हमें सकारात्मक प्रयास करने होंगे।

कृषि में महिलाओं के योगदान को देखते हुए उनके लिए स्वयं सहायता समूह बनाने एवं कृषि रोजगार तथा प्रशिक्षण पर ध्यान देकर कृषक परिवार एवं कृषि उत्पादन को गति देने के विशेष प्रयास ग्रामीण विकास की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कृषि क्षेत्र में नये परिवर्तनों एवं नवाचारों की लहर चल चुकी है जिसके तहत कृषि विकास, अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय मानदण्ड़ों की चुनौती पूरी करने के लिए तैयार है। इसी बात का ध्यान रख, हाल ही में राजस्थान सरकार तथा कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट **(GRAM)** का आयोजन कर नवाचारों एवं तकनीकों को किसानों तथा उद्यमियों तक पहुँचाने की कोशिश की गई है।

देश की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्य एवं निर्वाह सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ उनके जीवन स्तर में सुधार लाना देश के सामने एक चुनौती बनी हुई है।

इस चुनौती से निपटने के लिए खाद्यान्न उत्पादन की दर को जनसंख्या वृद्धि से ऊँचा रखना अति आवश्यक है अतः वर्तमान परिस्थितियों में सन् 2025 तक 300 मिलियन मैट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए खाद्यान्न उत्पादन के नए आयामों जैसे समन्वित कृषि पद्धति, टिकाऊ व जैविक खेती, संविदा खेती **(Contract farming)**, एग्री बिजनेस व एग्री क्लिनिक इत्यादि का किसानों तक प्रसार करना आज की महती आवश्यकता है। इसके

द्वारा ही खाद्य सुरक्षा स्थापित कर अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मांग पूर्ति कर देश के किसानों के जीवन स्तर को सुधारा जा सकता है।

मुझे यह जानकर हर्ष है कि यह विश्वविद्यालय विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों से कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। सूचना तकनीकों, मौसम पूर्वानुमान, बायोटेक्नोलोजी, कार्बन स्थिरीकरण, जलवायु प्रबन्धन, आधुनिक जैविक खेती, स्वसंचालित कृषि मशीनें, पॉलीहाउस प्रबन्धन, नेनोटेक्नोलोजी तथा संसाधन संरक्षण तकनीकों के उपयोग बढ़ाने के लिए विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से विश्वविद्यालय में कार्य किये जा रहे हैं। इन नये पहलुओं के समावेश से किसानों की कार्यदक्षता बढ़ेगी साथ ही कम समय में समुचित उत्पादन लेने में मदद मिलेगी।

हमारे देश की कृषि व्यवस्था पशुधन आधारित व्यवस्था है जो यहाँ की भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के लिए समीचीन है। हमारी संस्कृति तथा वसुधैव कुटुम्बकम की संवेदना के मध्य नजर आधुनिक तथा हाइटेक कृषि जनित सम्पूर्ण मशीनीकरण आधारित कृषि मॉडल की उपादेयता का पुनरावलोकन कर पशुधन आधारित कृषि पद्धति के जीविकावहन करने वाले कृषि मॉडल तैयार करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

हमें आज ऐसी कृषि शिक्षा की जरूरत है, जिसे ग्रहण करने के बाद हमारे विद्यार्थी स्वयं रोजगार की ओर उन्मुख हो सकें। कृषि स्नातक अपना रोजगार शुरू कर गाँव के अन्य युवकों को भी रोजगार मुहैया करा सकें। अतः रोजगारोन्मुखी कृषि शिक्षा हमारे कृषि विश्वविद्यालयों के लिए अहम प्राथमिकता होनी चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि मैं ज्ञान, पवित्रता एवं उद्यम तीनों एक साथ चाहता हूँ। विद्याार्थियों को इन तीनों पहलुओं पर मनन कर उन्हें अपने जीवन में अंगीकार करना चाहिए। समाज के चहुँमुखी विकास के लिए नई पीढ़ी

की तरफ देश की नजर है। आपसे अपेक्षा है कि शिक्षा का देश के विकास में उपयोग करें।

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष है कि विश्वविद्यालय में शिक्षक तथा विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं नियमित कक्षाओं के संचालन की मोनिटरिंग बायोमेट्रिक पद्धति से की जा रही है। ऑन–लाईन तकनीक का लाभ लेकर शिक्षा के क्षेत्र में कम समय में अधिक तकनीकी दक्षता हासिल करने में मदद मिलती हैं।

21 वीं सदी तकनीकी सदी है जहाँ धन तथा ताकत के बजाए ज्ञान एवं कौशल आधारित नवाचार ही सबसे बड़ी ताकत है। जिस देश के पास नवाचारों का प्रयोग कर नई तकनीकें विकसित करने के साधन एवं शक्ति है, वह देश आने वाले समय में सबसे समृद्ध राष्ट्र होगा।

महान चिन्तक चाणक्य ने कहा है कि युवा विश्व की सबसे बड़ी शक्ति है। भारत युवाओं का देश है, जहाँ कुल आबादी का लगभग 51–52 प्रतिशत युवाओं का है। हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार पिछले वर्षो में भारत में नवीन अनुसंधान तथा पेटेन्ट के क्षैत्र में वृद्धि हुई है। मैं सभी युवाओं एवं वैज्ञानिकों से आहवान करता हूँ कि ''अलग से सोचें और नया करें''। आप में असीमित ज्ञान एवं शक्ति है, इसे सही दिशा दें।

देश में 'नवाचारों की क्रांति' की शुरूआत करने के लिए ठोस कदम उठाये जा रहे हैं। संस्थानों तथा इनमें अध्ययनरत युवाओं को सजग होकर इन कार्यक्रमों से जुड़कर इनका लाभ लेना होगा।

आज पूरा विश्व नई तकनीकों के विकास के लिए 'टेलेंट सर्च' में लगा हुआ है। टेलेन्ट के लिए चारों तरफ सुनहरे अवसर है। हमारा देश तथा युवा विश्व में ज्ञान एवं टेलेन्ट के लिए जाना जाता है। आवश्यकता है, हम सही

समय पर पूरी योजना के साथ इनोवेटिव एक्टिविटी को आगे बढ़ायें तथा आने वाली युवा पीढ़ी के लिए भी एक उदाहरण बनें।

शिक्षा में नवाचार के साथ–साथ शिक्षा की गुणवत्ता पर अधिक जोर देना चाहिए। इस भौतिक युग में विज्ञान के साथ–साथ आचरण, कौशलता एवं आत्मिक चिंतन जैसे पहलुओं के प्रति भी शिक्षक एवं विद्यार्थियों को संवेदनशील होना चाहिए। ज्ञानार्थ प्रवेश एवं सेवार्थ प्रस्थान की भावना से ही समाज का चहुँमुखी उत्थान संभव है।

जैसे अधिकतर लोग अपनी दुर्बलता को नहीं जानते वैसे ही अधिकतर लोग अपनी क्षमताओं को भी नहीं जानते। शिक्षा के मन्दिर में आपको अपनी क्षमताओं को पहचानने का भरपूर अवसर मिला है। आज इस अवसर पर विद्या की साधना के अन्त में संकल्प लें कि आप अपने गुरूजनों, परिजनों एवं समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप काम करते हुए समाज के हित में विद्या का उपयोग करेंगे।

मैं एक बार पुनः सभी उपाधि व पदक प्राप्तकर्ताओं को बधाई देता हूँ। उज्ज्वल भविष्य के साथ आगामी नववर्ष के लिए आप सभी को शुभकामनाएँ।

।। जय हिन्द ।।